प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७
शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

जिंदगी में मुझे तेरा साथ भाया। किंतु आज उठ ही गया तेरा साया।।

त्वरित विचार
अग्र लेख-३०

कैलाश आदमी

मनुष्य साधारणतया अकेला नहीं रह पाता, कोई न कोई सम्बन्ध वह साथ लिये ही रहता है। अन्य न सही, माता-पिता और अन्य पालक/अभिभावक उसके साथी होते ही हैं। तदुपरान्त फिर अन्यान्य रिश्ते और मैत्री के माध्यम से बने निकट सम्बन्ध, जो किसी न किसी रूप में व्यक्ति के साथ बने ही रहते हैं। बिना सम्बन्धों का मनुष्य, हरे-भरे तथा घने जंगल में एक सूखे और कृषकाय वृक्ष की भांति होता है।

पारिवारिक सम्बन्ध तो जन्म के साथ ही बन चुके होते हैं, किन्तु सामाजिक तथा अन्य प्रकार के सम्बन्धों को पनपने में कुछ समय लगता है। सामाजिक सम्बन्ध जब पनपने लगते हैं, उसी बीच मित्रता के भाव भी जागते हैं। यह अस्वाभाविक नहीं है, वास्तविकता है। मित्रता का ध्येय पवित्र है, यह कोई भेद नहीं रखती। किसी भी जाति-संप्रदाय, धर्म, क्षेत्र के व्यक्ति से ही नहीं किसी भी उम्र के व्यक्ति से दोस्ती हो सकती है। इसमें लिंग का भी भेद नहीं रह जाता। स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध तथा अन्य कोई अन्य, मैत्री के लिए पात्र कोई भी हो सकता है। मित्रता एक जादू है, जो निर्जीव वस्तुओं में भी मित्र ढूंढ लेती है। साधारणतः इसे पागलपन भी कहा जा सकता है, किन्तु होता है।

किसी ने सही कहा है- मित्रता की नहीं जाती, हो जाती है जो दृष्टि से सीधे हृदय तक पहुँचती है। इसका कोई नियम नहीं है, परन्तु बन्धन अवश्य है। मित्रता का बन्धन अनोखा अटूट, स्थायी तथा दृश्य और अदृश्य किसी भी रूप में होता है। मित्र भले ही सामने न रहे, दूर चला जाये, किन्तु मित्र की छवि स्मृतियों में बनी ही रहती है।

सच्ची मित्रता कोई अपेक्षा नहीं रखती। मित्र से कभी कुछ मांगती ही नहीं, केवल समर्पण का भाव रखती है, केवल देना चाहती है। मित्रता से बढ़कर संसार में कोई दूसरा सम्बन्ध नहीं है। जब सारे सम्बन्ध बिखर जायें, कोई आश्रय न रहे, तब मित्र ही याद आता है। कुछ हो न हो, परन्तु मित्रता गले लगाना कभी नहीं भूलती।

आज मुझे मित्रता की याद इसलिए विशेष रूप से आ रही है क्योंकि मैंने आज श्री सुरेंद्रनाथ दुबे के रूप में ना केवल एक मित्र बल्कि बड़ा भाई खो दिया है। मुझे उनके परिजनों की ओर से उनके आकस्मिक निधन की कोई सूचना नहीं मिली किंतु वे जिस वाहन से मुझसे मिलने निर्दलीय प्रकाशन के शिवाजी नगर स्थित कार्यालय में आते थे उसके सारथी (चालक) ने इसकी सूचना दी तो मुझसे नहीं रहा गया और मैं तुरंत उनके ई-५ अरेरा कॉलोनी स्थित बेटी के आवास की ओर जाने हेतु उद्यत हुआ किंतु मेरे पुत्र प्रिंस अभिशेख अज्ञानी ने बताया कि दोपहर १२ बजे उन्हें अंत्येष्टि हेतु भदभदा मार्ग स्थित श्मशानघाट ले जाया जाएगा। अस्तु मैं ई-५ ना जाकर श्मशानघाट की ओर चल दिया। श्री दुबे पिछले चार-पांच वर्षों से अस्वस्थतावश अपने गुरुग्राम स्थित पुत्र के निवास से कभी-कभार ही भोपाल आते थे। मुझे कई बार गुरुग्राम जाने का अवसर मिला और उनके निवास पर रुका भी। इसके पूर्व उनका पुत्र जब नई दिल्ली में निवासरत था तब मैं वहां भी जाया करता था।

श्री दुबे आजीवन मप्र के शिक्षा विभाग में सेवारत रहे। जब श्री अर्जुनसिंह ने केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री का पदभार संभाला तब उन्होंने श्री दुबे की सेवाएं अपने विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी के रूप में ले ली। उन दिनों मेरा जब भी नई दिल्ली जाना-आना होता था तब मैं उनसे अवश्य मिलता था। इसके पूर्व उनसे मेरी पहचान निर्दलीय प्रकाशन के सलाहकार श्री सुब्बराव के माध्यम से हुई थी। श्री सुब्बराव मेरे गुरु भी थे। वे कांग्रेस सेवादल के मुख्य प्रशिक्षण अधिकारी रहे किंतु जब गांधीजी ने कहा कि कांग्रेस और उसके सभी संगठनों का विसर्जन कर दिया जाए तो श्री सुब्बराव ने सेवादल छोड़कर राष्ट्रीय युवा योजना बनाई जिसका मुख्यालय नई दिल्ली स्थित गांधी शांति प्रतिष्ठान केंद्र में रखा गया। योजनांतर्गत श्री सुब्बराव देश-विदेश में युवाओं को प्रशिक्षित करते थे। इस हेतु वे जब भी नई दिल्ली से महाराष्ट्र की ओर जाते तो मुझे पोस्टकार्ड द्वारा सूचित कर देते थे। एक बार जब वे दक्षिण की ओर जा रहे थे तब मैं टिफिन लेकर उनसे मिलने गया तब वहां श्री दुबे से श्री सुब्बराव ने मेरा परिचय कराया। यह परिचय आगे चलकर प्रगाढ़ता में बदल गया तथा उनके अंतिम सांस लेने तक जारी रहा। वे जब भोपाल आते तब शिवाजी नगर स्थित महादेव परिसर में अपनी पुत्री डॉ. अंजु वाजपेयी के निवास पर रुकते थे। गत माह ही मैं उनसे इसी जगह मिला था तब मुझे लगा कि श्री दुबे इतने कमजोर हो गए हैं कि वे दवाओं के बलबूते ज्यादा समय नहीं रह पाएंगे। मैंने अभिशेख को भी इसकी जानकारी दी तो वह भी उनसे मिल आया था।

श्री दुबे का जन्म २६ जनवरी १९३९ को गुना जिले के मुंगावली स्थित गंगाजली में हुआ था। उन्होंने वहीं प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की तथा आगे भोपाल आकर अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र और एलिमेंट्री शिक्षा में स्नातकोत्तर तथा विधि स्नातक, कृषि विशारद आदि परीक्षाएं उत्तीर्ण की। उन्होंने कई पुस्तिकाएं (किताबें) लिखीं तथा स्कूल शिक्षा नामक द्विभाषी मासिक पत्रिका भी निकालते रहे। उन्होंने वर्ष २०१४ में अपने जीवन पर केंद्रित 'जय जगत' पुस्तक के संपादन का काम मुझे सौंपा था। इसके अलावा उन्होंने 'मेरे सपनों की २२वीं सदी' द्विभाषी पुस्तिका भी निकाली जो काफी चर्चित रही। वे गांधी-विनोबा विचार के अनुयायी थे और इसी विचार ने मुझे उनसे अंतिम समय तक जोड़े रखा। वे कहते थे 'सारी दुनिया के हित में ही मेरा हित है'। उनका यह उद्घोष वाक्य मेरे लिए प्रेरक वाक्य बन गया और मैं इसी रास्ते पर चल रहा हूं।

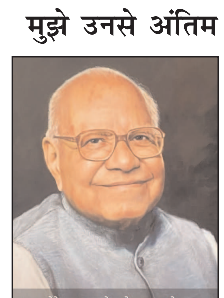

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-
जिंदगी में मुझे तेरा साथ भाया।
किंतु आज उठ ही गया तेरा साया।।

अपने-अपने 'एपस्टीन'

प्रेरणा

आपने ध्यान दिया क्या कि इस साल का आरंभ दुनिया भर में तीखी बहस, खींच-तान व आरोपों के गंदले माहौल में हुआ है? दुनिया कभी इतनी डरावनी नहीं थी जितनी आज है। इस दुनिया का नायक है, ज्येफ्री एपस्टीन। यह वह आदमी है जो अनैतिक जीवन व कारोबार का सरगना था। यह दुनिया के हैसियतदार लोगों को अपने जाल में फंसाता था। वर्ष 2019 में अमेरिका की एक जेल में उसकी संदिग्ध मृत्यु के वर्षों बाद उसकी कारगुजारियों के दस्तावेज दुनिया भर में भूचाल लाए हुए हैं।

वर्ष 2016 में हुए अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव के दौरान एपस्टीन और ट्रम्प के संबंध राजनीतिक मुद्दा बने थे। दिसंबर 2025 से उसकी अनैतिक कारगुजारियों की फाइलें सार्वजनिक होने लगीं। उन पन्नों में दर्ज दुनिया भर के मशहूर राजनेताओं, उद्योगपतियों और अन्य प्रभावशाली व्यक्तियों के नाम भी सामने आए। ये लोग एपस्टीन की अनैतिक दुनिया के खास ग्राहक हुआ करते थे। इन सबके कई आपत्तिजनक फोटो और ई-मेल इस फ़ाइल में हैं। इस फ़ाइल में भारत के केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी और उद्योगपति अनिल अम्बानी के अलावा किसी संदर्भ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी नाम है।

फाइल में नाम आने मात्र से कोई अपराधी नहीं हो जाता, लेकिन फिर भी महिलाओं-बच्चों के यौन शोषण का व्यापार करने वाले एपस्टीन से संपर्क, संवाद या निकटता गहरे शक का कारण तो बनती है। एपस्टीन इन 'बड़े' लोगों की वासनाएं तुष्ट करता था, उनके फोटो और रिकॉर्डिंग बनाता था और उनकी आड़ में वह दुनिया भर में सत्ता और सम्पत्ति की दलाली करता था। एपस्टीन चाहे भले आज न हो, उसके ख़तरनाक दस्तावेज कइयों के गुनाहों की परतें खोल रहे है।

इस पूरे प्रकरण में घिलेन मैक्स्वेल की भूमिका खासी महत्वपूर्ण रही है। वह एपस्टीन के सामाजिक नेटवर्क की प्रमुख कड़ी थी और उस पर नाबालिग लड़कियों को जुटाने व उन्हें एपस्टीन के जाल में फंसाने का अपराध सिद्ध हुआ है। वर्ष 2022 में उसे 20 वर्ष की क़ैद की सज़ा सुनाई गई थी।

इस संदर्भ में वर्ष 2004 में आई एक किताब काबिल-ए-गौर है- 'कंफ़ेशंस ऑफ एन इकोनोमिक हिटमैन।' जॉन पर्किन्स अपनी इस किताब में बताते हैं कि कैसे वे, कार्पोरेट के प्रतिनिधि की हैसियत से, खुद विकासशील देशों के अनैतिक राजनेताओं को तोहफे और रिश्वत देते थे। उनके देशों को असम्भव कर्ज देकर, ऐसे इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स करने के लिए राजी करते थे जिनसे अमेरिकी कंपनियों को लाभ मिलता था। ऐसे अनैतिक नेता देश को कर्ज के जाल में फंसा देते थे। फिर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के अनुकूल कानून और नीतियों का निर्माण, सैन्य ताक़त का डर और देश के संसाधनों पर क़ब्ज़ा करने का सिलसिला शुरू होता था। पनामा के नेता ओमार तोर्रीहोस का उदाहरण देते हुए पर्किन्स दावा करते हैं कि उन्होंने जब ऐसे दबावों का विरोध किया तो 1981 में एक संदिग्ध विमान दुर्घटना में उनकी मौत हो गई।

यह किताब कर्ज, वैश्विक वित्तीय बाज़ार, ग़रीब देशों की राजनीति और उनके बाज़ारों पर क़ब्ज़े के षड्यंत्र को उजागर करती है। इस किताब को इसलिए भी दुनिया भर में मान्यता मिली क्योंकि 'अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष' (आइएमएफ) और 'विश्व बेंक' जैसी संस्थाओं द्वारा गरीब, पिछड़े मुल्कों को कर्ज देना और फिर क़र्ज़े में दबी सरकारों पर बेजा दवाब डालकर उस देश की अर्थ व्यवस्था में अपने अनुकूल निश्चित परिवर्तन करवा लेना, एक जाना- पहचाना मॉडल था।

भारत ने भी 1991 में वैश्वीकरण का फ़ैसला गंभीर आर्थिक संकट और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के दबाव में लिया था। संसद में किसी बहस, मतदान या मीडिया में किसी भी प्रकार की आम सहमति बनाए बगैर, तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव और उनके वित्तमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने यह फैसला किया था।

तब से दुनिया जितनी बदली है, उतनी ही अनैतिक धंधेबाजों की दुनिया भी बदली व बड़ी हुई है। 21वीं सदी को 'एपस्टीन युग' मानें तो हम पाते हैं कि वह पैसे और प्रतिष्ठा का एक कवच बनाता था जिसकी आड़ में बड़े-बड़े राजनेताओं - धनपतियों-वैज्ञानिकों-विचारकों-शिक्षाविदों- तथाकथित समाजसेवियों का नेट्वर्क बनाकर उन्हें सेक्स कांड में फंसाकर अपनी मनमानी करवाता था।

क्या यह खेल अमेरिका तक सीमित था? नहीं, सच तो यह है कि जहां भी असीमित सत्ता और पूंजी का गठजोड़ होगा, वहीं 'एपस्टीन' पैदा होंगे। भारत में इसका एक मॉडल तथाकथित बाबाओं - साधकों - तांत्रिकों के रूप में काम करता है। इन आध्यात्मिक गुरुओं के दरबार में राजनेता, उद्योगपति, कलाकार सभी हाजिरी लगाते हैं। इसके पीछे यौन शोषण के कांड तो होते ही रहे हैं, पर न तो कभी 'एप्सटीन-फाइल' की तरह उसकी जांच हुई है और न ही सारा सच बाहर आया है।

इस पूरी कहानी का एक पक्ष और भी है - न्याय-व्यवस्था का पक्ष। अमेरिका में एपस्टीन का गुनाह पहली बार 2008 में प्रमाणित हुआ। कई सबूत मिले। जो कुछ हुआ व हो रहा था उस सबकी जानकारी पुलिस, अदालत, सरकार सभी को थी, फिर भी व्यवस्था ने एपस्टीन से समझौता कर लिया। यह कहानी बहुत कुछ वैसी ही है जैसी हम अपने यहां पाते हैं। हम देखते हैं कि गुरमीत राम रहीम को उसके गुनाहों के लिए 2017 में बीस साल की आजीवन क़ैद हुई, लेकिन व्यवस्था ने उससे ऐसा समझौता कर रखा है कि वह 'फरलो' और 'पैरोल' पर पिछले 9 सालों में लगभग 250 दिन, विशेषकर चुनावों के दौरान जेल से बाहर आ जाता है।

हम याद करें तो गुजरात में बिल्कीस बानू का सामूहिक बलात्कार करने वाले, उसकी तीन साल की बच्ची और दूसरे रिश्तेदारों की हत्या करने वाले ग्यारह अपराधियों को आजादी की 75 वीं वर्षगांठ के अवसर पर 'चरित्रवान ब्राह्मण' का ख़िताब देकर गुजरात सरकार ने रिहा कर दिया था। अब तो हमारे यहां राजनेताओं द्वारा यौन हिंसा सामान्य मान ली गयी है। एपस्टीन की अपनी दुनिया थी। असामान्य रूप से अमीर और रसूखदार लोगों की अपनी दुनिया होती ही है। जरूरत से ज्यादा धन और सत्ता व्यभिचार के रास्तों पर ले जाती है। हम आम लोग इन सबसे अनभिज्ञ, संसाधनों के अभाव में कैसी भी ग़रीबी स्वीकार कर जी लेते हैं, पर असामान्य अमीरी और ऐय्याशी का जैसा खुला प्रचार व प्रदर्शन अब हो रहा है, वह पूरे समाज को लालची बनाता जाता है। साधारण लोग उस चक्रव्यूह में फंसकर अभिमन्यु की तरह मारे जाते हैं। यही हमारा 'एपस्टीन-युग' है, जहां पैसे व सत्ता का बोलबाला है। (सप्रेस)

शिक्षाविद एवं गांधी विचारक श्री सुरेंद्र नाथ दुबे पंचतत्व में विलीन

निर्दलीय संवाद

भोपाल। प्रसिद्ध शिक्षाविद एवं गांधी विचारक श्री सुरेंद्र नाथ दुबे जो निर्दलीय प्रकाशन के संरक्षक सह सलाहकार एवं त्रैमासिक 'स्कूल शिक्षा' के संस्थापक संपादक रहे, का आज 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं जिनमें उनकी पत्नी श्रीमती सरोज और पुत्र अरविंद सम्मिलित हैं।श्री दुबे कई पुस्तकों के लेखक थे तथा शिक्षक कल्याण के राष्ट्रीय फाउंडेशन के सहायक सचिव, शैक्षणिक संस्थाओं के अखिल भारतीय महासंघ के राष्ट्रीय महासचिव और अवार्डी शिक्षकों के अखिल भारतीय मंच के अध्यक्ष रहे। वे वर्ष 1978 से 82 तक राज्य शिक्षा संस्थान में समन्वयक रहे। इसके उपरांत क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय से जुड़े रहे तथा 1983 से 1993 शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण की राज्य परिषद के समन्वयक शिक्षक कल्याण के नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय फाउंडेशन में 1995 तक प्रतिनियुक्ति पर रहे। तदुपरांत 31 जनवरी 2001 तक एससीईआरटी के समन्वयक एवं टीचर एजुकेशन के राज्य बोर्ड में सेवाएं दी। इस बीच वे भारत सरकार की नई शिक्षा नीति के तहत मानव संसाधन मंत्रालय में विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी रहे। वर्ष 2014 में उनके अमृत महोत्सव पर निर्दलीय प्रकाशन के संस्थापक श्री कैलाश आदमी के संपादन में जय जगत पुस्तक प्रकाशित हुई जिसे देश-विदेश में ख्याति मिली। उनकी आज अपरान्ह भदभदा विश्राम घाट पर उनकी अंत्येष्टि के पश्चात आयोजित श्रद्धांजलि सभा में श्री दुबे के अग्रज श्री महेंद्र नाथ दुबे मप्र छत्तीसगढ़ के श्रमायुक्त रहे। उनके लघु भ्राता श्री राजेंद्र नाथ दुबे, श्री त्रिलोकीनाथ दुबे एवं डॉ. त्रिभुवननाथ दुबे के अलावा परिजनों में संजय मिश्रा और अजय मिश्रा श्रद्धांजलि सभा में अन्य परिजनों के साथ उपस्थित थे।

सभा में निर्दलीय प्रकाशन के संस्थापक संपादक श्री कैलाश आदमी ने कहा कि श्री दुबे ऐसे संत पुरुष थे जो मोहमाया के बीच रहते हुए भी सदैव मोहमाया से अलिप्त रहे तथा शिक्षक रहते हुए भी छात्र बने रहे जो उनकी स्वाध्यायीवृत्ति से सदैव झलकता था। उनकी अस्थियों का संचयन 10 मार्च को सुबह 8 बजे किया जाएगा।

निर्दलीय प्रकाशन परिसर में श्री सुरेंद्र नाथ दुबे द्वारा रोपित वंश वृक्षावली

संपादक: प्रिंस अभिशेख अज्ञानी (९८२६४२२८२०)   प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

निष्पक्षता, निर्वैरता व निडरता का दैनिक प्रवक्ता

निर्दलीय

www.nirdaliya.com ई-मेल: kailashaadami2010@gmail.com, nirdaliyadaily@gmail.com

वर्ष-५३/१५   भोपाल ८ मार्च, डाक १० मार्च २०२६   मूल्य -1+1/-संप्रेषण /स्वैछिक

संस्थापक संपादक
-कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी'
(९४२४४४३४०१)

संपादक
-प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी)
(९८२६४२२८२०)

सलाहकार/संरक्षक- सुरेंद्र नाथ दुबे (गुरुग्राम)/सेठ रामनिवास गुप्ता, श्रीमती कविता मल्होत्रा (नई दिल्ली)

मुख्य संरक्षक
पवन कुमार जैन (बदनावर)

प्रबंध संपादक
अशोक निर्मल

साहित्य संपादक-
सरिता गर्ग 'सरि' (जयपुर)

स्वामी निर्दलीय प्रकाशन एवं स्वत्वाधिकारी कैलाश श्रीवास्तव के लिए संपादक प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी)' (दृष्टि जन संगठन) द्वारा निर्दलीय प्रेस भोपाल द्वारा जेयन ऑफसेट के सहकार्य से मुद्रित तथा एफ-116/7 शिवाजी नगर,भोपाल -462016 से प्रकाशित

'शरिया,' 'मनुस्मृति' और भारतीय संविधान

राम पुनियानी

भारतीय संविधान को आजादी के संघर्ष के मूल्यों के आधार पर गढ़ा गया है। संविधान सभा, जो मोटे तौर पर भारत की जनता का प्रतिनिधित्व करती थी, ने भारतीय संविधान का निर्माण किया जो हमारे राष्ट्रीय जीवन का पथप्रदर्शक है। संविधान स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व एवं सामाजिक न्याय पर आधारित लोकतांत्रिक समाज की स्थापना की अपेक्षा एवं आव्हान करता है।

भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने की वकालत करने वाला एक तबका शुरू से ही इस संविधान का विरोधी रहा है। उनके विचार 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' (आरएसएस) के मुखपत्र 'आर्गेनाईजर' में प्रकाशित एक लेख में जाहिर हुए थे। इसमें यह कहते हुए भारतीय संविधान का विरोध किया गया था कि इसमें कुछ भी भारतीय नहीं है और इसे हिंदू स्वीकार नहीं करेंगे। सावरकर ने एक कदम आगे बढ़ते हुए कहा था कि 'मनुस्मृति' ही हमारा संविधान है।

केवल यही वर्ग नहीं है जो संविधान के प्रति उपेक्षापूर्ण नजरिया रखता है। मौलाना मुफ्ती शमाइल नदवी ने भी इसी तरह का वक्तव्य दिया है। ये सज्जन हाल में जावेद अख्तर से ईश्वर के अस्तित्व पर बहस के बाद चर्चित हुए हैं। उनकी एक टिप्पणी है जिसमें वे कहते हैं, 'मुसलमानों ने धर्मनिरपेक्षता को मान्यता देकर और 'शरिया' पर राष्ट्रीय संस्थाओं को सर्वोच्चता देकर गलती की।' उन्होंने लोकतंत्र और देश को धर्म से ऊपर रखने की भी आलोचना की। मौलाना ने सवाल उठाया कि क्या आस्थावानों को चुपचाप इस्लामिक कानूनों के विपरीत अदालतों के फैसलों को स्वीकार कर लेना चाहिए?

जिस तरह 'मनुस्मृति' ब्राम्हणवाद के मूल्यों का संकलन है, वहीं 'शरिया' कई चीजों का मिश्रण है। 'शरिया' एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ होता है मार्ग या रास्ता। इस्लामिक कानून और आचरण संबंधी ये नियम निम्न स्त्रोतों पर आधारित हैं - कुरान, हदीस (पैगम्बर मोहम्मद के कथन और कार्य), इज़मा (विद्वानों की सर्वसम्मत राय) और कियास (दो मसलों में समानताओं के आधार पर उन्हें एक बराबर मानना)। 'शरिया' केवल गलत काम करने के लिए दंड की व्यवस्था नहीं है, वह व्यक्तिगत आचरण एवं कानूनी मसलों के संबंध में मार्गदर्शन भी है। व्यवहार में 'शरिया' की व्याख्या विधिशास्त्र के विभिन्न केन्द्रों द्वारा की जाती है (सुन्नी, हनफी, शाफई, मलिकी, हम्बली, शिया और जाफरी)। इस प्रकार 'शरिया' की न्याय प्रणाली में विविधता है।

मुस्लिम बहुल लगभग 55 देशों में से केवल सऊदी अरब, ईरान एवं अफगानिस्तान में कानून पूर्णतः 'शरिया' पर आधारित हैं। कुछ अन्य मुस्लिम बहुल देशों में यह आंशिक रूप से लागू है। भारत में केवल 'मुस्लिम पर्सनल लॉ' 'शरिया' के आधार पर बनाए गए हैं। बदलते समय और सामाजिक हालातों में इन कानूनों में आए बदलावों के मद्देनजर क्या किया जाना चाहिए? भारत में धर्म के नाम पर राजनीति करने वाले लगातार 'मनुस्मृति' को लागू करने की बात करते हैं। क्या मुफ्ती के दावे के अनुसार 'शरिया' को भी संविधान से ऊपर रखा जा सकता है? विधि विशेषज्ञ फैजान मुस्तफा तर्क देते हैं कि हर देश में संविधान ही सर्वोपरि है। कई देशों में संविधान 'शरिया' को मान्यता देता है और उसके कुछ प्रावधानों को संविधानों में स्थान भी दिया गया है।

मुस्लिम बहुल देशों में लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थिति क्या है? इनमें से कुछ देश बहुत कम लोकतांत्रिक हैं तो कुछ में जनता की आवाज ज्यादा सुनी जाती है। सोशल मीडिया पर इन दिनों मौलाना मुफ्ती शमाइल नदवी की इस बात के लिए आलोचना की जा रही है कि वे मुसलमानों को संविधान का पालन न करने के लिए भड़का रहे हैं, जो एक राष्ट्र विरोधी कृत्य है। वहीं दूसरी ओर कई लोग 'शरिया' का समर्थन करने के लिए मुफ्ती की प्रशंसा कर रहे हैं। दिलचस्प है कि भारतीय इतिहास के मध्यकाल के मुस्लिम शासकों ने भी 'शरिया' को लागू नहीं किया था।

जहां मौलाना मुफ्ती की अपनी राय है, वहीं डॉ. असगर अली इंजीनियर, जो भारत में इस्लाम के सबसे बड़े अध्येता थे, की संविधान के संदर्भ में 'शरिया' की भूमिका पर अलग राय थी। डॉ. इंजीनियर अक्सर 'शूरा' (आपसी विचार-विमर्श) का जिक्र करते हुए तर्क देते थे कि समकालीन विश्व में लोकतंत्र एवं उससे जुड़े सिद्धांतों का पालन संभव है। डॉ. इंजीनियर का मानना था कि कुरान की अवधारणाओं और आधुनिक प्रतिनिधि लोकतंत्र - जो एक मानवीय अवधारणा है - एकदम समान भले ही न हों, परंतु 'आधुनिक लोकतंत्र के मूल तत्व और कुरान की लोगों से 'विचार-विमर्श' करने की हिदायत करीब-करीब एक-सी हैं।'

डॉ. इंजीनियर के अनुसार 'नई संस्थाएं विकसित होती रहती हैं और मनुष्य अपने दुनियावी अनुभवों के मुताबिक इन संस्थाओं में सुधार करता रहता है। समकालीन विश्व में 'शूरा' की अवधारणा का अर्थ होना चाहिए, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना, जिनके लिए चुनाव एक अनिवार्य जरूरत होगी। कुरान न केवल 'शूरा' की अवधारणा के बारे में बताता है, बल्कि तानाशाही की किसी भी अवधारणा का जरा भी समर्थन नहीं करता।'

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में, जो लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित था और जिसका लक्ष्य लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना था, में अन्य इस्लामिक विद्वानों के साथ-साथ इस्लाम के बहुत बड़े अध्येता मौलाना अबुल कलाम आजाद और समर्पित मुस्लिम नेता खान अब्दुल गफ्फार खान भी शामिल थे। ये सभी नेता लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र और लोकतांत्रिक मूल्यों और संस्थाओं की स्थापना के प्रति प्रतिबद्ध थे।

कुछ साल पहले मुस्लिम महिलाओं ने 'शाहीन बाग आंदोलन' के माध्यम से अपनी लोकतांत्रिक ताकत का अहसास कराया था। वर्तमान समय की जरूरत क्या है? भारत में मुसलमान हिन्दुत्व की राजनीति के निशाने पर होने के कारण अपने आपको घिरा हुआ-सा महसूस कर रहे हैं। मुसलमानों में रूढ़िवाद बढ़ रहा है। उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती आधुनिक संस्थाओं के माध्यम से नागरिक के रूप में अपने अधिकारों की रक्षा करने की है। इस्लाम में भी कानूनों की कई धाराएं और न्यायशास्त्र की विभिन्न प्रणालियां हैं। चूंकि ये 'शरिया' का हिस्सा हैं, इसलिए 'शरिया' किसी मसले पर क्या कहती है, इस पर भी विवाद संभव है। चूंकि मुस्लिम यहां अल्पसंख्यक हैं, इसलिए उनके पर्सनल-लॉ हैं, जिनका विरोध होता रहता है।

वर्तमान में हम दो परस्पर विरोधी स्थितियों का सामना कर रहे हैं। एक ओर गरिमा और समानता के सिद्धांत हैं, जो 'संयुक्त राष्ट्र संघ' के घोषणापत्र में भी शामिल हैं। वहीं दूसरी ओर धार्मिक दक्षिणपंथ की शक्ति पिछले कुछ दशकों में बढ़ी है। मौलाना मुफ्ती शमाइल नदवी को इस्लाम की अवधारणाओं की जानकारी भले ही हो, उनके लिए समकालीन समाज और लोकतांत्रिक मूल्यों के बारे में जानना भी जरूरी है।

(सप्रेस)

नारी

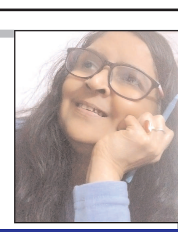

चंचलिका शर्मा

कभी वह दाम्भिक पिता की
पुत्रि होती ......
रौबीले भाई की
सिमटी सी बहन होती
विवेक हीन पति की
पत्नी है होती बेतुके तर्कशील पुत्र की
माँ भी होती .
तभी वह एक आदर्श नारी कहलाती ....
जीवन के
हर अध्याय को, मूक बन कर पढ़ती,
दिए हर दर्द को निर्वाक सहती,
उसकी हर समझ नासमझी समझी जाती
तभी तो वो अबला नारी है कहलाती ......
सरे आम उसकी अस्मिता
लूटी जाती, अराजकता की घुटन में
हर पल वो जीती
रक्षक भी भक्षक बन
जब सामने आते,
बदनामी के डर से
बेचारी नारी चुप रह जाती......
उसकी ख़ामोशी को बेबसी समझते,
उसकी लाचारी को कमज़ोरी समझते
विकृत पुरूषार्थ की
पल पल भोग बनती
तभी तो वह नारी कहलाती ......

वड़ोदरा

कहां गई वो आग कि जिसमें, शोणित सदा नहाता था

निर्दलीय विशेष

शशिकांत गुप्ते

सत्ता के इर्द गिर्द घूमती सियासत में कौन कामयाब होता है? इस सवाल का जवाब मिलता है शायर अंबर बहराईची द्वारा रचित निम्न शेर में

ये सच है रंग बदलता था वो हर इक लम्हा
मगर वही तो बहुत कामयाब चेहरा था

यह तो व्यंग्य की भाषा हुई लेकिन वास्तव में सियासत में कौन सक्रिय होते हैं। यह बयां होता है शायर बेकल उत्साही द्वारा रचित निम्न शेर में- ये दबदबा ये हुकूमत ये नशा-ए-दौलत,
किराया-दार हैं सब घर बदलते रहते हैं।

ये लोग ऐसे किराएदार हैं जम्हूरियत में जनता के मकान रहते हैं,जनता की सेवा करने का वादा करतें हैं,लेकिन एक बार घर घुस जातें हैं,मकान खाली करने का नाम ही लेते हैं। जनता के मकान में तो स्वयं रहते हैं लेकिन अपनी सात पुश्तों के लिए सारा इंतज़ाम कर लेते हैं,फिर भी हुकूमत का नशा उतरता ही नहीं,जब खुद का शरीर खाने-पीने की ताकत खो देता है,तब अपने साहबजादों या सगे संबंधियों के हाथों बागडोर थमा देते हैं।

इसे सल्तनत कहे या परिवारवाद कहें,कोई फर्क नहीं पड़ता है कारण अपने हमाम में कोई भी लिबास पहनकर नहीं नहाता है। हां लेकिन सियासत में एक दूसरे पर तोहमत लगाने का सिलसिला जारी रहता है। कुछ अहबाब अर्थात मित्रों को सियासत का इतना नशा चढ़ता है कि वे घर फूंक तमाशा देख वाली कहावत को चरितार्थ करते हैं लेकिन नशा उतरता ही नहीं है,ऐसे सियासतदानों के नशे पर तंज करता शायर शकील जमाली द्वारा रचित शेर निम्न शेर है-

तबाह कर दिया अहबाब को सियासत ने
मगर मकान से झंडा नहीं उतरता है

जम्हूरियत में सियासतदान यह भूल जातें हैं कि मुल्क की मालिक तो जनता है। शायर अल्लामा इक़बाल द्वारा रचित निम्न शेर में जम्हूरियत की हक़ीक़त बया होती है-

जम्हूरियत एक तर्ज़-ए-हुकूमत है कि
जिस में बंदों को गिना करते हैं तौला नहीं करते

उपर्युक्त सभी मुद्दों को पढ़ने सुनने के बाद सच्चाई छिप नहीं सकती है। सियासतदानों ने जनता को नादान,नासमझ समझने की भूल नहीं करना चाहिए। ये पब्लिक है सब जानती है।

इस मुद्दे पर सन 1970 में प्रदर्शित फिल्म पहचान के लिए गीतकार वर्मा मलिक ने गीत लिखा है,गीत की निम्न पंक्तियां प्रासंगिक हैं-

सब से बड़ा नादान वही है जो समझे नादान मुझे
कौन कौन कितने पानी में सब की है पहचान मुझे

सियासतदान कितने भी धार्मिक बने लेकिन असलियत बयां होती है,गीत निम्न पंक्तियों में-

धर्म कर्म सभ्यता मर्यादा नज़र ना आयी मुझे कहीं
गीता ज्ञान की बातें देखो आज किसी को याद नहीं

समाजवादी चिंतक विचारक स्वतंत्रता सैनानी डॉ. राम मनोहर लोहिया का यह कथन कि सत्ता साधन है साध्य नहीं, यह लोहियाजी के लोकतांत्रिक और समाजवादी विचारों का मूलमंत्र है। वे मानते थे कि सत्ता का उपयोग जनता की भलाई, सामाजिक-आर्थिक समानता के लिए एक माध्यम (साधन) के रूप में किया जाना चाहिए, न कि उसे अंतिम लक्ष्य (साध्य) बनाकर व्यक्तिगत स्वार्थ या तानाशाही के लिए इस्तेमाल करना चाहिए।

आज लोहियाजी के उपर्युक्त नीतिगत कथन का स्मरण करने का कारण है, दुर्भाग्य से कुछ स्वयं को समाजवादी कहलाने वालें सत्ता को सर्वोपरि मानने लगें हैं।

सन 1963 में गैर कांग्रेसवाद का नारा बुलंद किया था,यह नारा लोहियाजी ने रणनीति के तहत किया था। लोहियाजी ने कहा था जब कांगेस से अधिनायकवाद समाप्त हो जाएगा तब हम कांग्रेस का भी हाथ थामेंगे।

दुःख होता है कि राजनीति के शीर्ष पर पहुंचकर स्वयं को समाजवादी कहलाने वालें,ना सिर्फ सत्ता के मोह में लिप्त हो गएं हैं बल्कि पुत्र के मोह से स्वयं को दूर नहीं रख पा रहें हैं। जब देश में धार्मिक उन्माद, चरम पर है, धर्म के नाम पर अधर्म की पराकाष्ठा दिखाई दे रही है। सांप्रदायिक वैमनस्यता के गरल का नित वमन हो रहा है। कानून सिर्फ पुस्तकों में पढ़ने तक सीमित हो गया है।

अपराधी बेख़ौफ़ है,आमजन खौफजदा है। सर्वोच्च न्यायालय के विरोध के बाद भी बुलडोजर अपने विध्वंसक अधर्म का बदस्तूर प्रयोग कर रहा है।

उपर्युक्त अनैतिक,अराजक, अन्याय की गतिविधियों की निरंतरता और कानून की भी अवहेलना की जा रही है और समाजवाद का आवरण ओढ़े लोग मौन है?

डॉ. लोहिया युद्ध के प्रबल विरोधी और अहिंसक नागरिक प्रतिरोध (सत्याग्रह) के समर्थक थे। वे युद्ध को विनाशकारी मानते थे और परमाणु जैसे हथियारों के इस्तेमाल पर रोक लगाने के पक्षधर थे। लोहिया जी का मानना था कि युद्ध से कोई भी समस्या हल नहीं होती, बल्कि यह मानवता के लिए खतरा है। आज विश्व के अनेक देशों में हो रहें युद्ध को रोकने की पहल करने या युद्ध दुष्परिणामों से जागृति लाने के बजाए सत्ता की लालच में लिप्त समाजवादी सत्ता केंद्रित राजनीति में ही उलझे हुएं दिखाई देते हैं। कुछ कथित समाजवादी अपने शहर की गली को छोड़ दिल्ली की दौड़ लगाने में अपनी शान समझ रहें हैं। ऐसे लोगों के लिए प्रसिद्ध शायर अकबर इलाहाबादी द्वारा रचित निम्न शेर सटीक है,

क़ौम के ग़म में डिनर खाते हैं हुक्काम के साथ
रंज लीडर को बहुत है मगर आराम के साथ

इसी तरह शायर कलीम आजिज द्वारा रचित शेर भी प्रासंगिक है-

उठते हुओं को सब ने सहारा दिया कलीम
गिरते हुए ग़रीब सँभाले कहाँ गए

उक्त मुद्दों पर साहित्य को ही समाज का दर्पण बनना पड़ता है। जब आमजन समस्याओं से जूझ रहा हो तब मानसिक उदासीनता को खत्म करने के लिए प्रसिद्ध कवि बालकवि बैरागी द्वारा रचित गीत अग्निवंश की कुछ निम्न चुनिंदा पंक्तियों का स्मरण होता है-

कहां गई वो आग कि जिसमें,
शोणित सदा नहाता था,
कहां गई वो आग कि जिसमें,
महाप्रलय मुस्काता था।

-इंदौर

जे.के.स्टील फर्नीचर
भोपाल

जीवन मारण
स्वत्वाधिकारी संपर्क-9826422823

१. पेट्रोल पंप के सामने,चूना भट्टी, कोलार मुख्य मार्ग, २. सर्वधर्म कॉलोनी सी सेक्टर पुल समीप कोलार मुख्य मार्ग, ३. बरखेड़ी कलां मुख्य मार्ग, भोपाल